ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 94

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

मोटे अनाज के प्रति जागरूकता एवं स्वीकार्यता

डॉ0 भावना पाण्डेय

सहायक आचार्य– समाजशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धुषण–गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-18.04.2023, Revised-25.04.2023, Accepted-29.04.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मोटे अनाज के सम्बन्ध में समाज में व्याप्त जागरूकता एवं इसके प्रति लोगों की स्वीकार्यता को जानने का प्रयास किया गया है। भोजन जीवन का अधार है, हम सभी जानते है कि मनुष्य जन्म के समय हड्डी एवं मांस से बना हुआ एक प्राणी मात्र होता है। उसे प्राणी से सामाजिक प्राणी बनने की जो यात्रा है, उसे सामाजीकरण की प्रकिया द्वारा प्राप्त किया जाता है, तो शोधार्थिनी का यह मानना है कि यदि हम समाज में मोटे अनाज से सम्बन्धित सभी दृष्टिकोणों यथा, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, भौगोलिक मानदण्डो को ध्यानगत एवं इससे सम्बन्धित लाभों के बारे में लोगों को बताये एवं उस पर बात चीत करें तो निश्चित रूप से हम हमारे परिवार की पाठशाला से विश्व की पाठशाला तक इसे सिखा पायेंगे।***

कुंजीभूत शब्द– मोटे अनाज, जागरूकता, स्वीकार्यता, सामाजिक प्राणी, हाशिया, मिलेट्स, आधुनिकरण, जागरूकता, स्वकार्यता।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य "मोटे अनाज" के सम्बन्ध में समाज में व्याप्त जागरूकता एवं उसके प्रति लोगों की स्वीकार्यता पर संयुक्त राष्ट्र 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित किया है। यह बहुत ही अच्छी बात है, कि पूरे वर्ष मोटे अनाजों के प्रति लोगो को जागरूक करने के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें। अन्तर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष समर्थित संकल्प का उद्देश्य समाहित करने से विश्व स्तर पर इसके प्रति लोगों में जागरूकता, खाद्य सुरक्षा पोषण, आजीविका सुरक्षित करना, किसानों की आय बढ़ाना, गरीबी उन्मूलन एवं सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देने के दृष्टिकोण से प्रभावी हैं। अतः भोजन में इन पोषक अनाजों को सामिल करना हमारे स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है।

भारत में मोटा अना के इतिहास को यदि हम देखें तो यहॉ सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो द्वारा भी मोटे अनाजों को उगाने और खाने के पुरातत्व सम्बन्धी सबूत मिले है। आधुनिक युग में जब धीरे–धीरे चावल और गेंहू ज्यादा लोकप्रिय हो गये तो मोटे अनाज हाशिये पर धकेल दिये गये, लेकिन आज भी उन्हें दुनिया के कम से कम 130 देशों में उगाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था 'फूड एण्ड एग्रीकल्चर आर्गेनाइजेशन' (FAO) के मुताबिक मोटें अनाज सूखी जमीन में न्यूनतम इनपुट लगाकर भी उगाये जा सकते है। ये जलवायु परिवर्तन का भी प्रभावशाली रूप से सामना कर सकते है। FAO का कहना है कि इसलिये ये उन देशों के आदर्श समाधान है जो आत्मनिर्भरता बढ़ाना चाहते है और आयतित अन्न पर अपनी निर्भरता को कम करना चाहते है।

कृषि विकास के लिये अन्तर्राष्ट्रीय कोष (International Fund For Aqrcultural Development) द्वारा वर्ष 2013–14 में मध्य प्रदेश के डिंडोरी जिले में 'कोदो और कुटकी' (मोटा अनाज) जैसी फसलो की खेती को पुनर्जीवित करने हेतु की गई। इस पहल ने ऐसे अनाजो की खेती को एक नया रूप देने में सफलता प्राप्त की है, जिनकी कृषि लगभग हाशिये पर पहुॅच गई थी।

मोटे अनाज को अक्सर सुपरफूड के रूप में सन्दर्भित किया जाता है, इनके उत्पादन को स्थायी कृषि और स्वस्थ विश्व के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। वर्तमान में भारत में तीन प्रमुख मोटें अनाज (ज्वार, बाजरा, रागी) को उगाया जाता है। इसके साथ ही भारत मोटे अनाजों की जैव अनुवांशिक रूप से विविध और स्वदेशी किस्मों की एक–एक समृद्ध श्रृंखला को विकसित कर रहा है। भारत में इसके प्रमुख उत्पादक राज्य– राजस्थान, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश सरकार की पहल से मिलेट्स की खेती का दायरा बढ़ा हैं।

योगी सरकार ने मिलेट्स पुनक द्वारा कार्यक्रम शुरू किया है। जिसके जरिये मिलेट्स की खेती को प्रोत्साहन देने पर सरकार अगले 4 साल में 200 करोड़ रूपये खर्च करेगी। 2.5 लाख किसानों को मोटे अनाज के फ्री बीज देने का लक्ष्य तय किया गया है, साथ ही साथ निलेट्स प्रसंस्करण पर जोर देगी।

2.9 लाख किसान सीखेंगे उन्नत कृषि के गुर–2023 से 2026–27 तक मिलेट्स के मूल्य सवंर्द्धन के लिये प्रदेश में कुल 55 मिलेट्स प्रसंस्करण पैकिंग, विपणन यूनिट की स्थापना की जायेगी।

भारत में परम्परागत रूप से मोटें अनाज का उत्पादन होता रहा है। हालांकि कृषि क्षेत्र में आधुनिकीकरण और नवीन तकनीकों व नये बीजों के आगमन से मोटे अनाज के प्रति लोगों का अनाज कम हो गया था किन्तु बदलती जलवायु और परिस्थितियों ने पुनः मोटे अनाजों की प्रासंगिता को बढ़ा दिया है।

मोटें अनाज के उत्पादन में अन्य फसलों की उपेक्षा कम समय, कम जल लगता है। साथ ही इन्हे उच्च तापमान वालें क्षेत्र व कम जलोढ़ या लोमी मिट्टी में उगाया जा सकता हैं। इसके लिये पानी उर्वरक और कीटनाशकों की भी न्युनतम आवश्यकता होती है। मोटें अनाज की खेती कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मद्द करती है जो कि एक वैश्विक समस्या है।

भारत विश्व में मोटे अनाज के उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। दुनिया भर में 32 मिलियन हेक्टेयर से अधिक भूमि में इसकी खेती की जाती है। भारत, नाइजीरिया और चीन दुनिया के सबसे बड़ें उत्पादक देश है, जिनका वैश्विक उत्पादन 55% से अधिक है।

*****

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक